डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

# अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, दिसम्बर 2021

वर्षः 05 अंकः 02

वैदिकगणित भारतीय ज्ञान विज्ञान के गौरवशाली स्तंभों में से एक हैः अतुल कोठारी 03

डॉ0 आम्बेडकर के विचारों को आत्मसात् करने की जरूरत हैः कुलपति 04

## व्यक्तित्व विकास में खेल की अहम भूमिका होती हैः कुलपति

17 नवम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आवासीय क्रीड़ा विभाग व एक्टिविटीज क्लब के संयुक्त संयोजन में अन्तर्विभागीय खेल–कूद प्रतियोगिता का शुभारम्भ पद्मश्री अरूणिमा सिन्हा स्टूडेंट एमिनिटी सेंटर में किया गया।

प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि खेल में खिलाड़ियों को खेल की भावना से प्रतिभाग करना चाहिए। खेलों में हार–जीत लगी रहती है, प्रतिस्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि सभी छात्रों को खेलों में सहभागिता अवश्य दर्ज करानी चाहिए। खेलों से हमारा शरीर स्वस्थ एवं आकर्षक बनता है, जो आलस्य को दूर कर उर्जा प्रदान करता है, हमें रोगों से मुक्त रखता है। मनुष्य के व्यक्तित्व विकास में खेल की अहम भूमिका होती है, इससे ही मनुष्य आत्मनिर्भर तथा जीवन में सफलता प्राप्त करता है

कार्यक्रम में क्रीड़ा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो0 जसवंत सिंह ने खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का क्रीड़ा विभाग खेल गतिविधियों को सुचारुरूप से संचालित कर रहा है। विद्यार्थियों द्वारा अच्छा प्रदर्शन भी किया जा रहा है। कुलपति प्रो0 सिंह द्वारा खेल में अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों की प्रोत्साहन धनराशि में वृद्धि की गयी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया है कि प्रतिभागी विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे। कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि खेल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विश्वविद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों के साथ खेल को बराबर महत्व दिया जा रहा है। प्रतिभागी शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ खेल को अपनी दिनचर्या में शामिल करें।

कार्यक्रम में क्रीड़ा प्रभारी आवासीय परिसर डॉ0 मुकेश वर्मा ने बताया कि अन्तर्विभागीय खेल–कूद प्रतियोगिता 09 जनवरी तक कुल 22 दिन चलेगी। जिसमें 09 प्रतियोगिताएं कुलपति ब्रिगेड एवं कुलसचिव ब्रिगेड के मध्य होगी। छात्र–छात्राओं के बीच कुल 21 खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा।

प्रतियोगिता का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। अतिथियों का स्वागत बैज लगाकर एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर किया गया। कार्यक्रम के दौरान अन्तर्महाविद्यालयीय बैडमिंटन प्रतियोगिता की महिला विजेता एवं पुरूष उपविजेता को कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की शिक्षिका डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी की लिखित पुस्तक शिक्षा और मनोविज्ञान का विमोचन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अर्जुन सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 आर0के0 सिंह, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो0 तुहिना वर्मा, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 प्रदीप खरे, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, सहायक कुलसचिव डॉ0 रीमा श्रीवास्तव एवं मो० सहिल, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, सहित बड़ी संख्या में खेल प्रेमी उपस्थित रहे।

## 26वें दीक्षांत समारोह में शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान होंगे मुख्य अतिथि

13 दिसम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में दीक्षांत समारोह की तैयारियों को लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने समिति के संयोजकों के साथ महत्वपूर्ण बैठक की।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि 20 दिसम्बर 2021 को प्रातः 10 बजे विश्वविद्यालय का 26 वां दीक्षांत समारोह होगा। इस समारोह के मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री भारत सरकार के धर्मेन्द्र प्रधान होंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रदेश के उप मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री डॉ0 दिनेश शर्मा व डॉ0 रोजर गोपाल, उच्चायुक्त, त्रिनिदाद एवं टोबैगो रहेंगे। उच्चायुक्त डॉ0 रोजर गोपाल को मानद् उपाधि प्रदान की जायेगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता अवध विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल करेंगी।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने दीक्षांत समारोह की तैयारियों के लिए बनाई गई 19 समितियों के संयोजकों से जानकारी प्राप्त की। सभी संयोजकों से कहा कि कार्यों में शीघ्रता दिखाते हुए तय समय पर कार्य को सम्पन्न करें। कुलपति ने बताया कि दीक्षांत समारोह के परिधान में पुरूषो के लिए सफेद कुर्ता एवं सफेद पायजामा तथा महिला परिधान में सफेद कुर्ता एवं सफेद सलवार अथवा लाल बार्डर की साड़ी होगी। इन दोनों परिधानों के साथ पीले रंग की सदरी पहनावे के रूप में होगी। कुलपति ने बताया कि कुलाधिपति के निर्देशों के अनुपालन में दीक्षांत समारोह में ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय के लगभग 25 छात्र–छात्राएं शामिल होंगे।

दीक्षांत समारोह के दिन सायंकाल परिसर के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। कुलपति प्रो0 सिंह ने परिसर की साफ–सफाई एवं स्वामी विवेकानंद सभागार की साज–सज्जा को तय समय पर पूरा करने करने के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश प्रदान किया।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि दीक्षांत समारोह की तैयारियों के लिए कुल 19 समिति बनाई गई है। जिसमें समन्वय समिति, अनुशासन, स्वयं सेवक एवं पार्किंग समिति, मंच व्यवस्था एवं संचालन समिति, परिसर साज–सज्जा समिति, निविदा/क्रय समिति, विद्वत परियात्रा एवं रोबिंग समिति, विशिष्ट अतिथि परिधान समिति, मुद्रण एवं स्मृति चिन्ह समिति, फोल्डर/स्मारिका वितरण समिति, गार्ड ऑफ ऑनर समिति, निमंत्रण समिति, उपाधि एवं पदक समिति, मीडिया एवं फोटोग्राफी समिति, सांस्कृतिक संध्या समिति, पंडाल एवं आसन व्यवस्था समिति, वित्त समिति, भोजन समिति, दीक्षांत सप्ताह आयोजन समिति, दीक्षांत खेल आयोजन समिति हैं।

बैठक में कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी प्रो0 चयन कुमार मिश्र, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 आर0के तिवारी, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 एसएस मिश्र, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 आर0के0 सिंह, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल, प्रो0 रमापति मिश्र, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, अंकित श्रीवास्तव, आशुतोष सिंह, लोकेन्द्र सिंह, गोपनीय प्रशासनिक अधिकारी रमेश सिंह, दिलीप पाल, बाल कुमार सहित अन्य उपस्थित रहे।

## खिलाड़ियों में सकारात्मक सोच होना जरूरीः जिलाधिकारी

02 दिसंबर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह निर्देश पर परिसर में आवंटित अंतर्महाविद्यालयी हैंडबॉल महिला प्रतियोगिता का आयोजन दीक्षा भवन के मैदान में किया गया। अंतर्महाविद्यालयी हैंडबॉल महिला प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिलाधिकारी अयोध्या नीतीश कुमार ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया।

खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए जिलाधिकारी नीतीश कुमार ने कहा कि सभी को अपने बेसिक कांसेप्ट बेहतर करने चाहिए। बिना बेसिक कांसेप्ट और मनोयोग को समझे बिना हम अपने जीवन में बेहतर नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि जीवन में खिलाड़ियों की सोच का सकारात्मक होना बहुत जरूरी है। ऐसा करने से दिन प्रतिदिन बेहतर प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि अच्छे खिलाड़ी बनाने में खेल प्रशिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इनके प्रति सम्मान बनाये रखें। अंत में जिलाधिकारी ने कहा कि किसी भी कार्य को मन से करना चाहिए, उसमें सफलता मिलनी सुनिश्चित है।

स्वागत भाषण में प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए खिलाड़ियों से बेहतर प्रदर्शन की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय दिन प्रति. दिन खेल के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यहां के खिलाड़ी हर क्षेत्र में बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। हम आशा करते हैं कि नार्थ जोन और ऑल इंडिया में बेहतर प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

प्रतियोगिता के पहले मुकाबले में रमाबाई राजकीय महिला पी0जी0 कॉलेज और शिव सावित्री महाविद्यालय के मध्य मैच में शिव सावित्री महाविद्यालय 10–3 से विजयी रहा। दूसरे मुकाबले में अवध विश्वविद्यालय आवासीय परिसर अयोध्या और देव इंद्रावती महाविद्यालय के मध्य खेला गया जिसमें आवासीय परिसर अवध विश्वविद्यालय देव इंद्रावती महाविद्यालय को 14–10 से हराकर विजेता बनी। वहीं तीसरे मुकाबले में शिव सावित्री और नंदिनी नगर महाविद्यालय के मध्य शानदार मैच हुआ जिसमें नंदिनी नगर 12–8 से विजयी रही। फाइनल मुकाबले में अवध विश्वविद्यालय परिसर की टीम नंदिनी नगर महाविद्यालय को 17–10 से हराकर अंत –र्महाविद्यालय हैंडबॉल महिला प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ टीम बनी।

प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण और समापन सत्र में मुख्य अतिथि अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक, विशिष्ट अतिथि सचिव क्रीड़ा परिषद डॉ0 आशीष प्रताप सिंह, डॉ0 हेमंत सिंह, डॉ0 विनय कुमार सिंह, डॉ0 अमूल कुमार सिंह, डॉ0 प्रभात कुमार सिंह और डॉ0 सुरेंद्र मिश्रा की उपस्थिति में विजेता व उपविजेता खिलाड़ियों को पदक चिन्ह से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। विभाग की छात्राओं द्वारा मुख्य अतिथि और मंचासीन सभी अतिथियों का स्वागत बैज लगाकर किया। अतिथियों का सम्मान अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह भेंटकर किया गया। मंच संचालन शारीरिक शिक्षा संस्थान के शिक्षक डॉ0 अर्जुन सिंह ने किया। पर्यवेक्षक की भूमिका डॉ0 राजेश सिंह और शिव करन सिंह निभाई। इस अवसर पर डॉ0 अनिल कुमार मिश्र, डॉ0 कपिल राणा, डॉ0 त्रिलोकी यादव, डॉ0 अनुराग आदि शिक्षक एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

मंथन

15 दिसम्बर 2021: मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी, विक्रमसंवत् 2078

'पहचान बड़ी करनी है तो दिल तो बड़ा करना ही होगा'

## सरकार की सकारात्मक पहल

किसी भी सभ्य समाज का महिलाएं आधार स्तम्भ हैं। हमारे आस पास महिलाएं, सहृदय बेटियां, संवेदनशील माताएं, सक्षम सहयोगी और अन्य कई भूमिकाओं को बड़ी कुशलता व सौम्यता से निभा रहीं है। लेकिन आज भी दुनिया के कई हिस्सों में समाज उनकी भूमिका को नजरअंदाज करता है। इसके चलते महिलाओं को बड़े पैमाने पर असमानता, उत्पीड़न, वित्तीय निर्भरता और अन्य सामाजिक बुराइयों का खामियाजा सहन करना पड़ता है। सदियों से ये बंधन महिलाओं को पेशेवर व व्यक्गित ऊंचाइयों को प्राप्त करने से अवरुद्ध करते रहे हैं। लड़कियों की शादी की उम्र को लेकर केंद्र सरकार की ताजा पहल एक महत्वपूर्ण कदम साबित है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने लड़कियों के विवाह की आयु को अठारह से बढ़ा कर इक्कीस साल करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। उम्मीद की जा रही है कि इससे जुड़ा विधेयक संसद में मौजूदा सत्र में पेश किया जाएगा। पहल के पीछे मुख्य विचार यह है कि विवाह जीवन का एक ऐसा पड़ाव होता है, जहां भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव होता है। शादी की वजह से बहुत सारी लड़कियों की पढ़ाई रुक जाती है और अक्सर भविष्य में अपने भरोसे जीवन संवारने का उनका सपना अधूरा रह जाता है। कम उम्र में बच्चे पैदा करने और अन्य वजहों से स्त्रियों की सेहत भी खतरे में रहती है। यह भी विचित्र है कि हर प्रकार की संवैधानिक समता के बावजूद शादी की निर्धारित उम्र में लड़के और लड़की के लिए अलग–अलग न्यूनतम सीमा है। हालांकि ऐसा होना नहीं चाहिए, लेकिन सच यह है कि हमारे समाज में विभेदीकरण सबसे प्रत्यक्ष रूप में स्त्री और पुरुष के बीच ही दिखता है। विवाह के बाद एक स्त्री का दायरा आमतौर पर परिवार और घर हो जाता है। वक्त के साथ इस धारणा में बदलाव आ रहा है, लेकिन उसकी रफ्तार अभी बहुत धीमी है। यह छिपा नहीं है कि फिलहाल लड़कियों की शादी की उम्र अठारह वर्ष तय होने के बावजूद देश के कई हिस्सों में बाल विवाह एक समस्या के तौर पर कायम है। कम उम्र में गर्भधारण से लेकर पोषण की स्थितियों की वजह से प्रसव के दौरान जान गंवाने वाली महिलाओं की संख्या एक गंभीर चुनौती है। ऐसे में अगर व्यक्ति के रूप में गरिमा और अवसर के साथ सभी स्तरों पर बराबरी के साथ स्त्रियों के पक्ष में कोई पहल की जाती है, तो वह निश्चय ही प्रशंसनीय है।

## त्याग व तपस्या का नाम है भारतीय किसान

प्राचीन काल से ही भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है । अधिकतर लोगों की आजीविका कृषि पर निर्भर रही है। वर्तमान भारत में भी अधिसंख्य जनसंख्या की आजीविका का प्राथमिक स्रोत कृषि ही है। ब्रिटिश साम्राज्य की क्रूर नीतियों के कारण उपजे भुखमरी के संकट को किसानों ने ना केवल दूर किया, बल्कि भारत को खाद्यान्न क्षेत्र में आत्मनिर्भर भी बनाया। किसानों का देश की आर्थिक व सामाजिक प्रगति में अति महत्वपूर्ण योगदान रहा है। किसानों द्वारा देश की प्रगति में इसी महत्वपूर्ण योगदान को ध्यान में रखकर भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने सुप्रसिद्ध 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया।

किसानों के अथक परिश्रम के कारण ही देश में हरित क्रांति का आगमन संभव हो पाया। भारत के पांचवें प्रधानमंत्री व किसानों के मसीहा कहे जाने वाले चौधरी चरण सिंह की जयंती पर 23 दिसंबर को प्रतिवर्ष किसान दिवस मनाया जाता है। चौधरी चरण सिंह के कारण ही जमींदारी उन्मूलन विधेयक वर्ष 1952 में पारित हो सका। जिसके कारण भारतीय कृषि की दिशा व भारतीय कृषकों की दशा में अभूतपूर्व व सकारात्मक परिवर्तन आया। यह दिन पूर्णतः किसानों को समर्पित है। इस दिन किसानों के सम्मान में वाद–विवाद, कला, निबंध प्रतियोगिता अन्य कार्यक्रमों का आयोजन कर किसानों के अथक परिश्रम को याद किया जाता है। एक सामान्य भारतीय किसान का संपूर्ण जीवन तपती धूप, गरजते बादल व कड़ाके की सर्दी के बीच अपने खेतों में बीतता है। एक किसान का जीवन एक योद्धा के समान होता है। वह सभी हालातों में अपने खेत में डटा रहता है। जिस प्रकार एक वीर सैनिक सभी परिस्थितियों में सीमा पर डटा रहता है। इसीलिए भारतीय किसानों को त्याग तपस्या की प्रतिमूर्ति की संज्ञा दी जाती है।

लगभग सभी सरकारों की राजनीतिक नीतियां किसानों के हितों के इर्द–गिर्द ही घूमती रहती है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि की कुल 18 प्रतिशत हिस्सेदारी है। कृषि लगभग 50 प्रतिशत श्रमिकों को खेतिहर मजदूरों के रूप में रोजगार प्रदान करती है। भारत की कुल आबादी का दो तिहाई हिस्सा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। इन सभी परिप्रेक्ष्यो को दृष्टिगत रखकर भारतीय किसानों को अन्नदाता व देश की रीढ़ माना जाता है।

कृषि प्रधान देश होने तथा किसानों को अन्नदाता की संज्ञा दिए जाने के बावजूद भी देश में किसानों की स्थिति अत्यधिक दयनीय है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2013–19 के

हर्षित मौर्य

बीच भारतीय किसानों की आय 30 प्रतिशत बढ़ी व वहीं उनके कर्ज में 58 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। विभिन्न सरकारों के द्वारा समय–समय पर चकबंदी जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाए जाते रहे हैं, किंतु अभी भी किसानों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए विभिन्न महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

भारत में लगभग 80 प्रतिशत किसान सीमांत (1 एकड़ से कम) या छोटे श्रेणी से आते हैं, जिसके कारण वे आधुनिक कृषि तकनीकों का प्रयोग करने में अक्षम है। जिसके लिए पंचायत स्तर की योजनाएं लागू की जानी चाहिए ताकि किसानों की आर्थिक स्थिति सुधर सके। जमीनी स्तर पर सरकार द्वारा किसानों को आधुनिक तकनीकों का प्रयोग व उन्नत बीजों का उपयोग किए जाने हेतु जागरूक किया जाना चाहिए । रासायनिक खादों व उर्वरकों के दुष्परिणामों के बारे में अवगत कराकर जैविक खादों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं।

## खूबसूरती, ऊंचाई और दृढ़ता का प्रतीक हैं पर्वत

ईश्वर द्वारा रचित सभी वस्तुओं में हैं। सन् 2021 के लिए थीम 'स्थाई पर्वतीय पर्यटन' रखी गई है। जिससे इस वर्ष भी पर्वतों के संरक्षण में सभी अपने कर्तव्यों को पूर्ण कर सकें।

अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस की घोषणा सन्

चंद्र भूषण मिश्रा

1992 में हुआ। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को पर्वतीय क्षेत्र के सतत् विकास के महत्व पर प्रकाश डालना और पर्वतीय क्षेत्र के प्रति दायित्व के लिए जागरूक करना है। यह दिन पर्वतों के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने, पहाड़ों के विकास में अवसरों और बाधाओं को उजागर करने और सहयोग करने के लिए मनाया जाता है।

पर्वत दिवस मनाने के पीछे मुख्य कारण यह भी है कि बहुत सारे लोगों का जनजीवन पर्वतों से जुड़ा हुआ है। जलवायु और भूमिगत परिवर्तनों के कारण पर्वतों की भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है।

पर्वतीय क्षेत्रों में विकास होता रहे इसलिए जरूरी है कि इन इलाकों में पर्यावरण संरक्षण हो। पर्वत से जुड़े लोग पर्वत के प्रति अपने दायित्वों को समझेस इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर प्रतिवर्ष इस दिन का आयोजन होता है।

वर्तमान में बहुत जरूरी है कि पर्वतीय क्षेत्र का ध्यान रखा जाए। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सन् 2002 को संयुक्त राष्ट्र ने अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष घोषित किया और सन् 2003 में 11 दिसंबर से हर वर्ष अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाने का संकल्प लिया गया। प्रत्येक वर्ष विश्व के कई सारे लोग पर्वतों के संरक्षण के लिए आगे आते हैं, और अपने दायित्व का निर्वाह करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रत्येक वर्ष एक विषय भी तय किया जाता है जिस पर विभिन्न देश काम भी करते हैं और हमारा मन भी प्रसन्न करते हैं। पर्वतों की खूबसूरती और हरियाली किसी का भी मन मोह सकती है। इन पर जमी बर्फ को देखकर मानो ऐसा प्रतीत होता है जैसे दुनिया में इससे अच्छा और कुछ भी नहीं।

दुनिया में पर्वत ना होते तो दुनिया कितनी अधूरी होती होती। पर्वत जहां खूबसूरती, ऊंचाई और दृढ़ता का प्रतीक है, वहीं बहुत से लोगों का जीवन भी इस पर आश्रित है। ये पर्वत ही हैं जो हमारी रक्षा भी करते हैं और हमारा मन भी प्रसन्न करते हैं। पर्वतों की खूबसूरती और हरियाली किसी का भी मन मोह सकती है। इन पर जमी बर्फ को देखकर मानो ऐसा प्रतीत होता है जैसे दुनिया में इससे अच्छा और कुछ भी नहीं।

## सम्मान से जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं मानव अधिकार

प्रत्येक मनुष्य के अपने परिवार,कार्य, सरकार, और समाज पर कुछ अधिकार होते हैं, जिनसे मनुष्य को जाति, राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग आदि किसी भी दूसरे कारण के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। इसी के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 10 दिसंबर 1948 को सार्वभौमिक मानव अधिकार घोषणापत्र को अधिकारिक मान्यता दी गई। अतः प्रत्येक वर्ष 10 दिसंबर को मानव अधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग का गठन 12 अक्तूबर, 1993 को हुआ था। आयोग का अधिदेश, मानव अधिकार संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2006 द्वारा यथासंशोधित मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 में निहित है। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग का गठन पेरिस सिद्धांतों के अनुरूप है जिन्हें अक्तूबर, 1991 में पेरिस में मानव अधिकार संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए राष्ट्रीय संस्थानों पर आयोजित पहली अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में अंगीकृत किया गया था तथा 20 दिसम्बर, 1993 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा संकल्प 48ध्134 के रूप में समर्थित किया गया था। यह आयोग, मानव अधिकारों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के प्रति भारत की चिंता का प्रतीक अथवा संवाहक है।

मानवाधिकार अधिकारों का एक समूह है जिसका हर मानव हकदार है। प्रत्येक मनुष्य को ये अधिकार विरासत में मिले हैं, चाहे वह किसी भी जाति, पंथ, लिंग, आर्थिक स्थिति से संबंधित हो। मानवाधिकार का लक्ष्य है कि सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। यह वास्तव में दुनिया में एक अच्छे जीवन स्तर के लिए आवश्यक है। मानवाधिकार किसी देश के नागरिकों के हितों की रक्षा करते हैं। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे जीवनस्तर को प्राप्त करने का अधिकार है जो उसे और उसके परिवार के स्वास्थ्य, कल्याण और विकास के लिए आवश्यक है, मानव अधिकारों में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों के साथ समानता एवं शिक्षा का अधिकार व नागरिक और राजनीतिक अधिकार भी सम्मिलित हैं।

लोगों के जीवन में मानव अधिकार का काफी महत्व

अनुज प्रताप सिंह

है क्योंकि इसके जरिए न केवल किसी एक देश का विकास होता है, बल्कि उस देश में रहने वाले प्रत्येक नागरिक का विकास संभव है ,मानव अधिकारों के चलते लोगों के साथ कोई भी ऐसा बुरा व्यवहार नहीं होता, जो उनके मूलभूत अधिकारों के खिलाफ होता है, मानव अधिकारों में सम्मिलित प्रत्येक अधिकार लोगों की भलाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मानव अधिकारों के उल्लंघन को रोकने के लिए कई सरकारी और गैर सरकारी संगठन प्रकाश में आ चुके हैं जिनका काम होता है यह निगरानी करना कि मानव अधिकारों का उल्लंघन ना हो, लेकिन इन संगठनों के भी काम करने की एक सीमा है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को मानव अधिकार के उल्लंघन होने पर स्वयं आवाज उठाने की जरूरत है।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति विश्वविद्यालय की समग्र गतिविधियों का आईना है। प्रेस परिषद, टेलीविजन और संविधान दिवस पर लेख बेहद ज्ञानपरक और रूचिपूर्ण रहे।

– सचिन

सुविचार

"खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।"

– विवेकानन्द

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादकीय मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
संकलन एवं सम्पादन
शशांक, अंशुमान, बलराम

avadhabhivyakti@gmail.com

Feedback

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

# वैदिक गणित भारतीय ज्ञान विज्ञान के गौरवशाली स्तंभों में से एक हैः अतुल कोठारी

30 नवम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा "वैदिक गणित एवं इसके उपयोग" विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय ई–सेमिनार का आयोजन 29–30 नवम्बर को किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि शिक्षा, संस्कृति उत्थान न्यास के महासचिव अतुल कोठारी ने कहा कि वैदिक गणित भारतीय ज्ञान विज्ञान के गौरवशाली स्वर्णिम आधार स्तंभों में से एक है। भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक शिक्षा के मूल बिन्दु में अवस्थित होनी चाहिए अन्यथा अपनी मौलिक विचारधारा तथा प्राचीन भारतीय मनीषा की पहचान पर संकट आ सकता हैं। परिणामस्वरूप विदेशों की ज्ञान पद्धति में पड़ने से समाज का सम्पूर्ण समय निकल जायेगा। उन्होंने कहा कि वैदिक गणित भारतीय विचारधारा के मूल में होने के कारण इसका गणितज्ञों द्वारा पठन–पाठन तथा शोध के तरीकों को समाज के प्रबुद्ध वर्ग मे प्रचारित एवं प्रसारित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में छोटी से छोटी गणना के लिए भी कैलकुलेटर पर निर्भर रहने वाली भीड़ के मध्य वैदिक गणित यह प्रमाण प्रस्तुत करता है कि मनुष्य मस्तिष्क से सामर्थ्यवान कोई यंत्र नहीं हैं। गणना के लिए हर छोटे–बड़े यंत्र का आविष्कार अंततः मानव के ज्ञान से ही सम्भव हो सका है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि वैदिक गणित के अध्ययन से न केवल छात्रों तथा शिक्षकों मे ऋतंभरा प्रज्ञा का विकास होगा। बल्कि कम समय में तीव्रता तथा शुद्धता के साथ गणना की क्षमता विकसित होगी। कुलपति ने वैदिक गणित के अंतरिक्ष विज्ञान तथा इन्फॉर्मेशन टेक्नोलोजी के क्षेत्र मे अनुप्रयोग किए जाने की बात कही। सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ0 कैलाश विश्वकर्मा ने वैदिक गणित के 16 मूल सूत्रों तथा 13 उपसूत्रों पर अपना व्याख्यान देते हुए गुणा, वर्गमूल निकालना, विचलन की समस्याओं को वैदिक गणित के माध्यम से हल करके प्रदर्शित किया। उन्होंने बताया कि वैदिक गणित के अनुप्रयोग की बहुतायत संभावना है जिसको अब बिना विलम्ब किए हुये शिक्षा के मंदिरों में क्रियान्वित किया जाना चाहिए। समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता राष्ट्रीय समन्वयक वैदिक गणित, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राकेश भाटिया ने कहा कि वैदिक गणित, वैदिक वेदान्त से प्राप्त गणितीय ज्ञान हैं। इसके जनक स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ पुरी के 143वें शंकराचार्य माने जाते हैं। उन्होंने छात्रों को प्रमेय, त्रिकोणमिति एवं ज्यामिति से संबंधित समस्याओं का समाधान करते हुए पी0पी0टी0 के माध्यम से वैदिक गणित के अनुप्रयोग पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने वैदिक गणित को सर्टिफिकेट, डिप्लोमा तथा एमएससी स्तर पर ऑप्शनल पेपर के रूप मे संचालित करने को भारतीय ज्ञान परंपरा को अक्षुण्ण बनाने की दिशा मे एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

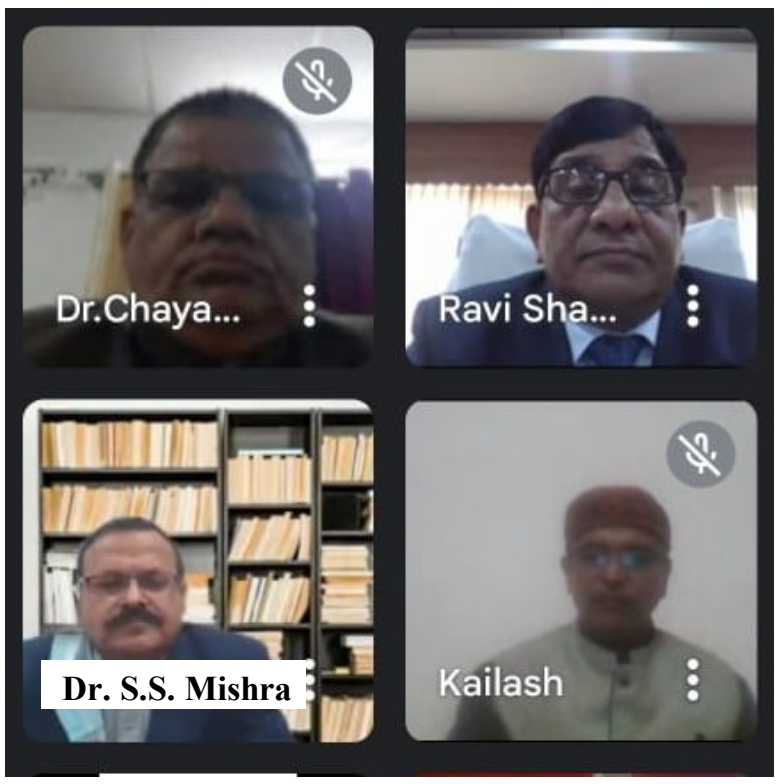


गणित एवं सांख्यिकी के विभागाध्यक्ष प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने बताया कि वैदिक गणित की सभी को शिक्षा दी जानी चाहिए। इसकी मदद से थोड़े से ही अभ्यास से आसानी से सीखा जा सकता है। विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो0 सी0के0 मिश्र ने कहा कि गणितीय प्रश्नों को हल करने में वैदिक सूत्र कारगर सिद्ध हुआ है। ये व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को बढ़ाता है। समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो0 एस0 के0 रायजादा ने कहा कि वैदिक गणित के अनुप्रयोग से समय की बचत की जा सकती है। इससे संसाधनों की रक्षा भी की जा सकती है। यह छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अभिषेक सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 मनोज कुमार द्वारा किया गया। तकनीकी सहयोग डॉ0 सघर्ष सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ0 संदीप रावत, डॉ0 संजीव कुमार सिंह, अनुराग सोनी, आलोक तिवारी, दिवाकर पांडेय, गायत्री वर्मा, सहित विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

## एन0सी0सी0 द्वारा सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर चलाया गया धन सग्रह अभियान

07 दिसंबर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर एन0सी0सी0 कैडेटों द्वारा धन संग्रह अभियान चलाया गया। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह को सशस्त्र सेना झंडा दिवस का प्रतीक चिन्ह 10/65 यूपी कम्पनी एन0सी0सी0 कैडेट्स द्वारा लगाया गया। अभियान में कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव, इंजीनियर आर0 के0 सिंह, डॉ0 संदीप कुमार मिश्र सहित से सहयोग राशि प्राप्त की गयी।

एन0सी0सी0 कैडेट्स द्वारा धन संग्रह अभियान भारतीय सशस्त्र सेना के पूर्व सैनिकों के कल्याण के लिए जनता से धन संग्रह के प्रति समर्पित वर्ष 1949 से 07 दिसंबर को भारत में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर हुए धन संग्रह का उद्देश्य युद्ध के समय हुई जनहानि में सहयोग, सेना में कार्यरत सैनिकों एवं सेवानिवृत्त सैनिकों और उनके परिवार के कल्याण हेतु किया जाता है। विषम परिस्थितियों में हमारी सीमाओं के प्रहरियों को सतत अहसास होना चाहिए कि प्रत्येक नागरिक उनके साथ हैं तथा उनके साहस, पराक्रम एवं कुर्बानियों का ऋणी है। संस्थानों, नागरिकों, विद्यार्थियों से अधिक से अधिक धन संग्रह किया जाना है।

इसी क्रम में एन0सी0सी0 कैडेट्स द्वारा परिसर के शिक्षकों एवं कर्मचरियों को शस्त्र सेना झंडा दिवस–2021 का प्रतीक चिह्न लगाया गया। जिसमें वित्त अधिकारी प्रो0 सी0के0 मिश्र, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 आर0 के0 तिवारी, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 रमापति मिश्र, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 महेंद्र पाल सिंह, डॉ० अनुराग तिवारी, कर्मचारी परिषद के अध्यक्ष डॉ0 राजेश सिंह, आशीष कुमार मिश्र सहित अन्य सहयोग राशि प्रदान किया। धन संग्रह अभियान के दौरान ज्ञान प्रकाश चौधरी, रवींद्र मिश्रा, शिवानी पांडे, शिव नारायण मिश्रा, मनीष कुमार, तेज सिंह, धर्मेंद्र यादव आदि सभी कैडेट्स और विद्यार्थी मौजूद रहे ।

## आदित्य पालीवान को मिला पावर लिफ्टिंग का गोल्ड मेडल

27 नवम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कौटिल्य प्रशासनिक भवन में विश्वविद्यालय के खिलाड़ी छात्र आदित्य पालीवाल को अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में 83 किग्रा0 वेट कैटेगरी में सर्वाधिक वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीतने पर गोल्ड मेडल एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मा. नित किया। इसके पहले भी आदित्य पाल. ीवाल ने सीनियर राष्ट्रीय पॉवर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में भी स्वर्ण पदक जीता है। इसके साथ ही कॉमनवेल्थ गेम्स के लिये क्वालीफाई किया। इस उपलब्धि पर कुल. पति ने खिलाडी को बधाई देते हुये भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन करने की शुभकामनाएं दी। मौके पर क्रीड़ा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो0 जसवंत सिंह व क्रीड़ा सचिव डॉ0 आशीष प्रताप सिंह ने खिलाड़ी छात्र को विश्वविद्यालय का नाम रोशन करने के लिये बधाई दी। इस अवसर पर शारीरिक विभाग के शिक्षक डॉ. अनुराग पाण्डेय, गिरीश पंत, सुरेन्द्र प्रसाद, आशीष मौर्या, रामस्वारथ वर्मा, शिव कुमार सिंह उपस्थित रहे।

## बाल दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

15 नवम्बर । डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र, वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल तथा एक्टिविटी क्लब के संयुक्त संयोजन में ग्राम पंचायत मसौधा में बाल दिवस के अवसर पर सोमवार को जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करती हुई मुख्य वक्ता महिला अध्ययन केंद्र तथा वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने ग्रामवासियों को बताया कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस 14 नवम्बर को बाल दिवस के रूप में मनाते है। नेहरू बच्चों के बीच काफी लोकप्रिय थे उन्हें चाचा नेहरू के नाम से भी जाना जाता है। पं0 नेहरू ने बच्चों को राष्ट्र व समाज का मजबूत आधार स्तंभ बताया है। उन्होंने बच्चों की शिक्षा व स्वस्थ जीवन पर विशेष बल दिया है। प्रो0 तुहिना ने कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए स्वस्थ्य समाज का होना आवश्यक है। समाज के बालक एवं बालिकाओं को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व भावनात्मक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना बहुत जरूरी है। उन्हें ऐसा वातावरण दिया जाए जिससे वे एक स्वस्थ व मजबूत देश के निर्माण में अपना योगदान प्रदान कर सकें।

कार्यक्रम में सेल की सदस्य डॉ0 महिमा चौरसिया ने बताया कि आज के बालक और बालिकाएं ही कल के युवा होंगे। इनके हाथ में ही राष्ट्र की बागडोर होगी। यदि बालक और बालिकाओं का पालन पोषण सही ढंग से किया जाये तो सही रूप में माना जायेगा कि राष्ट्र निर्माण में हर व्यक्ति अपना योगदान दे रहा है। उन्होंने बताया कि नवाचार से देश की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति सुदृढ़ होती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचारों का आत्ममंथन किया जाये तो पता चलता है कि देश के विकास में बालक एवं बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण योगदान है। यदि वे मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से सशक्त नहीं है तो किसी भी राष्ट्र के सशक्त होने की कल्पना नहीं की जा सकती है।

कार्यक्रम में प्रो0 तुहिना वर्मा द्वारा ग्रामवासियों को बालिका सुरक्षा की शपथ दिलाई। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान ऋषिकेश वर्मा, डॉ0 स्नेहा पटेल, नीलम मिश्रा सहित बडत्री संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

## संवैधानिक अधिकारों के प्रति सजग रहेंः मुख्य नियंता

26 नवम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में संविधान दिवस के अवसर पर सरदार पटेल राष्ट्रीय एकात्मकता केन्द्र एवं ऋषभदेव जैन शोध पीठ के संयुक्त संयोजन में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कला संकायाध्यक्ष एवं मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने छात्र–छात्राओं एवं शिक्षकों को संविधान के प्रति गहरी निष्ठा के लिए प्रेरित किया। उन्होंने संविधान की बारीकियां बताते हुए सभी को संवैधानिक दायरे में रहते हुए नैतिकता का पाठ पढ़ाया। प्रो0 सिंह ने कहा कि हम केवल संवैधानिक अधिकारों के प्रति ही सजग रहते हैं, हमारे कर्तव्य क्या हैं इसके लिए कोई कभी नहीं सोचता। इसके लिए नागरिकों को संविधान में प्रदत्त अधिकारों का बारीकी से अध्ययन करना चाहिए। इसका अनुपालन जीवन में दृढ़ता से करना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रौढ़ एवं सतत प्रसार विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र ने बताया कि भारतीय लोकतंत्र में हमें जितने भी अधिकार प्राप्त हैं उनकी जानकारी समस्त भारतवासियों को होनी चाहिए। हम सभी को देश तथा संविधान के प्रति हमारे कर्तव्यों का भली–भांति ज्ञान होना चाहिए। कार्यक्रम में ऋषभदेव जैन शोधपीठ के समन्वयक एवं कला स्नातक के समन्वयक डॉ0 देव नारायण वर्मा ने अतिथियों को स्वागत करते हुए संविधान दिवस पर विद्यार्थियों को विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ के साथ किया गया।

कार्यक्रम का संचालन सरदार पटेल राष्ट्रीय एकात्मकता केन्द्र के डॉ0 अंकित मिश्रा ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 शिवांश कुमार ने किया। इस अवसर डॉ0 संग्राम सिंह, डॉ0 नीतू वर्मा, डॉ0 अनुराग सिंह, डॉ0 शैलेन वर्मा, डॉ0 आलोक मिश्रा, डॉ0 शालिनी सिंह, डॉ0 स्नेहा पटेल, डॉ0 प्रतिभा वर्मा, डॉ0 प्रतिभा सहित बी0ए0 के छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

- दीक्षांत सप्ताह के तहत 07 दिसम्बर 2021 को गणित एवं सांख्यिकी विभाग में 'दैनिक जीवन में गणित का उपयोग' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- अवध विश्वविद्यालय के सत्र 2021–22 की स्नातक प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं 16 जनवरी से 7 फरवरी 2022 तक चलेंगी।
- जनसंचार व पत्रकारिता विभाग में मंगलवार को ''गीता एट ए ग्लांस'' विषय पर 09 दिसम्बर, 2021 को एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- दीक्षांत समारोह के परिप्रेक्ष्य में प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग द्वारा ''उच्च शिक्षा में सतत शिक्षा का महत्व'' विषय पर 10 दिसम्बर, 2021 को एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- स्वैच्छिक श्रमदान एवं साफ–सफाई अभियान के तहत को कौटिल्य प्रशासनिक भवन के निकट स्थित नौ ग्रह वाटिका में 11 दिसम्बर 2021 को साफ–सफाई की गई।

## जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग में फेयरवेल एवं फ्रेशर पार्टी का आयोजन

26 नवम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग में छात्र–छात्राओं द्वारा फेयरवेल एवं फ्रेशर पार्टी का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें एम0ए0 जनसंचार एवं पत्रकारिता प्रथम वर्ष से मिस फ्रेशर शालिनी निषाद एवं मिस्टर फ्रेशर अभिषेक दूबे को चुना गया। वहीं बी0 वोक0 जनसंचार एवं पत्रकारिता से मिस मनीषा ओझा और मिस्टर फ्रेशर नीलेश द्विवेदी को बनाया गया। बेस्ड सीनियर अवार्ड एम0ए0 अंतिम वर्ष से सर्वेश श्रीवास्तव व स्वाति खरे को चुना गया। वहीं मिस अटायर बी0वोक0 प्रथम वर्ष की छात्रा परिणिता राय, मिस दिवा अवार्ड संध्या तिवारी व मिस्टर हैण्डसम के टैग से आदर्श मिश्र को नवाजा गया।

इन सभी प्रतिभागियों का चुनाव एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर व बी0वोक पंचम सेमेस्टर के छात्र–छात्राओं द्वारा डेयर गेम, बैलून डांस व रैंपवॉक को आधार बनाकर किया गया। समारोह में छात्रों ने नवागत छात्रों का स्वागत तिलक एवं मिष्ठान के साथ किया। इसके पश्चात विभाग की यात्रा से परिचित कराया। कार्यक्रम की शुरूआत विभाग के समन्वयक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी सहित अन्य शिक्षको ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस अवसर डॉ0 चतुर्वेदी ने बताया कि पत्रकारिता में भविष्य बनाने के लिए परिश्रम की जरूरत है। ज्ञान के साथ तकनीकी पहलुओं से अपने को अपडेट करते रहे। विभाग के शिक्षक डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा ने छात्रों से कहा कि लेखन करते वक्त शब्दों के चयन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। पत्रकारिता में भाषा ज्ञान का विशेष महत्व है। कार्यक्रम में डॉ0 राज नारायण पाण्डेय ने छात्रों से कहा कि उच्च आदर्श स्थापित करें और अग्रजों से सीख कर नए मानक स्थापित करें। इसी क्रम में डॉ0 अनिल कुमार विश्वा ने कहा कि पत्रकारिता के लिए विधि की जानकारी होनी चाहिए। इसके न होने से समस्याओं में फंस सकते है। फेयरवेल एवं फ्रेशर पार्टी को भव्य बनाने में सुरभि, शशांक, अंशुमान, अश्विनी, सुमन, बल. राम, प्रतिष्ठा, काजल, सौरभ, अवनीश, चन्द्रभूषण, ज्योति, अपराजिता एवं सचिन की विशेष भूमिका रही। इस अवसर पर प्रांजलि, ईशिता, अंकिता, अ खण्ड प्रताप, गीताजंलि, रामेन्द्र, याशिनी, श्रेया, शैलेन्द्र यादव, अंकिता श्रीवास्तव, सोनू, चन्द्रशेखर सहित अन्य उपस्थित रहे।

## देश की अर्थव्यवस्था स्वदेशी विकास मॉडल की ओर बढ़ रही हैः प्रो0 अग्रवाल

08 दिसम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग तथा ललित कला संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में 26 वें दीक्षांत समारोह के दृष्टिगत दीक्षांत सप्ताह के तहत ''भारतीय अर्थव्यवस्था में विकास के नये स्रोत'' विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो0 मनोज कुमार अग्रवाल ने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधित प्रारम्भिक विकास मॉडल भारतीय अर्थव्यवस्था की पूर्व आवश्यक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल नहीं रही। हम लोगों ने प्रारम्भिक आयोजन काल में विदेशी विकास मॉडल को अपनाया जिससे हमारा अपना रोजगार एवं उपक्रम निरन्तर गिरावट की स्थिति में पहुँच गया। प्रो0 अग्रवाल ने बताया कि कोविड–19 महामारी ने हमारी अर्थव्यवस्था में जो आर्थिक अवसाद उत्पन्न किया उसके साथ ही नये विकास के अवसर भी प्रदान किए। आज हमारी अर्थव्यवस्था आत्म. निर्भरता एवं स्वरोजगार के स्वदेशी विकास मॉडल पर आगे बढ़ रही हैं। आवश्यकता इस बात की हैं कि हम अपने लघु एवं कुटीर तथा कृषि आधारित ग्रामीण उद्योगों में निवेश को बढ़ाएं और उपभोग प्रवृत्ति के सापेक्ष माँग के अनुरूप ''एक जिला एक उत्पाद'' योजना के तहत् विपणन एवं ब्रान्डिंग करें, जिससे अर्थव्यवस्था के लोग आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बन के साथ स्वयं के रोजगार को बढ़ाते हुए अन्य लोगो को रोजगार देने में सफल होंगे। यदि हमें अपनी अर्थव्यवस्था का समुचित विकास करना है तो हमें विकास के इन नये स्रोतों को अवश्य ही उपयोग करते हुए प्रोत्साहित करना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संकायाध्यक्ष कला एवं मानविकी प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने बताया कि आज भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि आधारित कुटीर उद्योगों के उत्पाद की समुचित विपणन की आवश्यकता हैं जिससे उनका आय एवं रोजगार का स्तर बढ़ सकता हैं। विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि दीक्षांन्त सप्ताह के अन्तर्गत विशिष्ट व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था में विकास दर में आयी गिरावट को दूर करने में विभिन्न नये स्रोतों पर परिचर्चा के लिए किया गया। विशिष्ट व्याख्यान का संचालन फाइन आर्ट्स विभाग की सहायक आचार्य डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ किया। विशिष्ट व्याख्यान में विभाग प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने उपस्थिति सभी सुधीजनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर प्रो0 मृदुला मिश्रा, डॉ0 प्रिया कुमारी, डॉ0 अल्का श्रीवास्तव, श्री आशीष प्रजापति, के साथ कर्मचारी विजय कुमार शुक्ला, शिव शंकर यादव सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थिति रहीं।

## वर्तमान शिक्षा में टेक्नोलॉजी का विशेष महत्वः डॉ0 नीता सिंह

10 दिसम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के एम0एड0 विभाग में दीक्षांत सप्ताह के तहत 'टेक्नोलॉजी का शैक्षिक महत्व' विषय पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान की मुख्य वक्ता के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुल्तानपुर की शिक्षा विभाग की डॉ0 नीता सिंह ने बताया कि वर्तमान शिक्षा में टेक्नोलॉजी का विशेष महत्व है। इसका उपयोग करके छात्रों को अच्छी शिक्षा दी जा सकती है। उन्होंने टेक्नोलॉजी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तकनीक एक साधन है इस प्रक्रिया को अपनाने से विषयवस्तु की उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। उन्होंने बताया कि शिक्षण के लिए अधिगम की आवश्यकता नहीं होती। बल्कि अधिगम के लिए शिक्षण की आवश्यकता होती है। उन्होंने वैज्ञानिक पद्धति से शिक्षण करने की सलाह दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एम0एड0 विभाग के समन्वयक प्रो0 राजीव गौड़ ने छात्रों को शिक्षण में वैज्ञानिक सोच को विकसित करने के लिए शोध पर बल देने की बात कहीं और कहा कि शिक्षण में तकनीकी का प्रयोग करके शोध को आसान बनाया जा सकता है। विभाग की शिक्षिका डॉ0 शशि सिंह एवं डॉ0 नीलम सिंह ने छात्र–छात्राओं को एक भावी आदर्श शिक्षक बनने के लिए निरन्तर अध्ययन एवं शिक्षण टेक्नोलॉजी अपनाने की सलाह दी। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 महेन्द्र सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

## संचार कौशल में निपुणता जरूरीः डॉ0 अन्विता

10 दिसम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के समाज कार्य तथा एमपीएच विभाग में शुक्रवार को दीक्षांत सप्ताह के अन्तर्गत इफेक्टिव कम्युनिकेशन आफ प्रोफेशनल विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। विशिष्ट व्याख्यान में रामस्वरूप विश्वविद्यालय लखनऊ, समाज कार्य विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ0 अन्विता वर्मा ने विद्यार्थियों को प्रभावशाली संचार के विषय में विस्तार से बताते हुए कहा कि समाज कार्य के विद्यार्थी को संचार कौशल में निपूर्ण होना चाहिए। इससे समाज की बेहतर ढंग से सहायता के साथ उन समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि व्यक्तित्व विकास के लिए भी प्रभावशाली संचार बहुत महत्वपूर्ण है। प्रभावशाली संचार के लिए उन्होंने संचार के सेवेन–सी का भी वर्णन किया और बताया कि इन प्रभावशाली संचार के माध्यम से चुनौतीपूर्ण कार्य को सरलता से कर सकते हैं।

इस कड़ी में विभाग के समन्वयक डॉ0 विनय मिश्रा ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया तथा विभाग के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन विभाग के डॉ0 दिनेश कुमार सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 प्रभात सिंह द्वारा किया गया।

## डॉ0 आम्बेडकर के विचारों को आत्मसात् करने की जरूरत हैः कुलपति

06 दिसम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया चौधरी ने बताया कि अर्थशास्त्री के रूप रहे। वर्तमान में निश्चित रूप से आज अवध विश्वविद्यालय के आम्बेडकर में आम्बेडकर का महत्वपूर्ण योगदान समाज के विपन्न वर्ग के जीवन स्तर में चेयर, अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास रहा हैं। वे सामाजिक एवं आर्थिक सम. सुधार हुआ हैं। विभाग तथा फाइन आर्ट्स विभाग के नता के प्रति सदैव प्रयासरत रहे। संयुक्त तत्वावधान में बाबा साहब डॉ0 उन्होंने बताया कि उनका मानना था भीमराव आम्बेडकर की 65वीं पूण्यतिथि कि राज्य ऐसी नीति अपनायें जिससे पर ''आर्थिक समानता एवं डॉ0 समाजिक न्याय की स्थापना के साथ आम्बेडकर के विचारो की प्रासंगिकता'' जनकल्याण और निर्धनता का उन्मूलन विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का हो।

आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि डॉ0 आम्बेडकर जीवनपर्यन्त विपन्न वर्ग के उत्थान के लिए सदैव कार्य करते रहे। वे राष्ट्र के संविधान निर्माता के साथ–साथ मूल रूप से आर्थिक नीतियों के विशेषज्ञ थे। आज हमें अपने जीवन में आर्थिक समानता के लिए डॉ0 आम्बेडकर के विचारों को आत्मसात् करने की जरूरत है।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ0 शकुन्तला मिश्रा पुर्नवास विश्वविद्यालय, अर्थशास्त्र विभाग की डॉ0 अनामिका

कला संकायाध्यक्ष प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने डॉ0 अम्बेडकर के विचारों को रखते हुए कहा कि उपादेयता में वृद्धि के लिये धन का संचय आवश्यक हैं। प्रो0 शैलेन्द्र कुमार ने डॉ0 आम्बेडकर के आर्थिक समाजवाद पर अपने विचार रखे।

प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने बताया कि डॉ0 आम्बेडकर श्रम शक्ति के नि. रंतर विकास के वाहक रहे हैं। आम्बेडकर चेयर के समन्वयक एवं अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास के विभागाध्यक्ष प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि डॉ0 आम्बेडकर निरंतर विपन्नों के उत्थान के लिये कार्य करते

प्रो0 मृदुला मिश्रा ने डॉ0 आम्बेडकर के जीवन वृतांत पर प्रकाश डालते हुए बताया कि डॉ0 आम्बेडकर की महिलाओं के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। संगीत एवं अभिनय कला विभाग की छात्र–छात्राओं द्वारा सरस्वती बंदना एवं कुलगीत की प्रस्तुति की गई। अतिथियों का स्वागत प्रो0 विनोद श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 प्रिया कुमारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप में डॉ0 अल्का श्रीवास्तव, आशीष प्रजापति, कविता पाठक, राजीव कुमार सहित आचार्य, उपाचार्य, सहायक आचार्य एवं छात्र–छात्रायें उपस्थित रहे।

## निराश भारतीय मनीषा की आशा के नायक हैं रामः डॉ0 मुरली

10 दिसम्बर। अवध विश्वविद्यालय के हिन्दी भाषा एवं प्रयोजनमूलक विभाग में तुलसीदास और उनका समय विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय विलासपुर, छत्तीसगढ के हिन्दी विभाग के डॉ0 मुरली मनोहर ने प्रभु श्रीराम के लोक नायकत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जहाँ राम निराश भारतीय मनीषा की आशा के नायक हैं वहीं सीता प्रतिरोधी नारी शक्ति की बड़ी प्रतीक हैं। तुलसीदास ने रामचरितम. ानस के माध्यम से भारतीय परिवेश की मूल समस्याओं को पहचान कर संगठन और समन्वय के सूत्र से उसका समाधान देने की कोशिश की है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता द्वारा छात्रों के प्रश्नों का समाधान भी किया गया। कार्यक्रम में विभाग के समन्वयक डॉ. सुरेन्द्र मिश्र ने अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन विभाग के शिक्षक डॉ० चन्द्रशेखर ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन डॉ० स्वाति सिंह द्वारा किया किया।